International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 12-03-2024, Accepted: 02-04-2024, Published: 24-04-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 12-14

अर्चना पैन्यूली की कहानियों में भारतीय समाज और संस्कृति

ज्ञानी देवी गुप्ता
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, तलवंडी साबो, गुरु काशी विश्वविद्यालय तलवंडी साबो, पंजाब, भारत

सारांश
प्रवासी कहानीकार न अपने मूल देश को भूल सकते हैं, न वर्तमान देश की संकृति को अपने बच्चों में फलते–फूलते देख सकते हैं, इसके बावजूद वे बहुत सारी पश्चिमी बातों को स्वीकार कर चुके हैं। दोनों संस्कृतियों की तुलना उनकी रचनाओं में बार–बार होती है। प्रवासी कहानीकार अर्चना पैन्यूली की कहानियों में माँ प्रमुख विषय है और इसके माध्यम से वह दोनों संस्कृतियों का चित्रण करती है।

मूल शब्दः प्रवासी, संस्कृति, माँ, सौतेली, सेरोगेट

विषय परिचय और समीक्षा

हिंदी आज विश्व की अग्रणीय भाषा है। हिंदी को विश्व स्तर तक पहुँचाने में उन लोगों का विशेष योगदान है, जो भारत से बाहर जाकर विदेशों में बसे अर्थात प्रवासी। प्रवासी भारतीय में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने साहित्य रचना की। विदेश जाकर साहित्य से जुड़ने वाले बहुत से लेखकों ने अपनी मूल भाषा में लिखना उचित समझा। इस कारण प्रवासी हिंदी लेखकों की संख्या काफी अधिक है। प्रवास के लिए लोग विश्व के अलग–अलग देशों में गए, इस कारण प्रवासी हिंदी लेखक पूरे विश्व में फैले हुए हैं। प्रवासी की कल्पना हिंदी साहित्य में दूसरी भाषाओं की अपेक्षा अधिक उभरकर आई। प्रो. कृष्ण किशोर गोस्वामी अपने आलेख 'प्रवासी हिंदी साहित्य अस्मिता की चुनौतियाँ' में लिखते हैं –

"कितने ही देशों के अंग्रेज़ी साहित्यकारों ने अपनी जो रचनाएँ लिखी, उन्हें कभी प्रवासी साहित्य नहीं कहा गया। हाँ, विभिन्न देशों की सामाजिक–सांस्कृतिक विषमताओं के कारण उन्हें अमेरिकन इंगलिश, आस्ट्रेलियन इंगलिश, इंडियन इंगलिश आदि की संज्ञा दी गई। डेनमार्क की एक सुविख्यात साहित्यकार बिलिक्शन ने इटली और अफ्रीका में अपने प्रवास काल के दौरान अनेक रचनाएँ लिखीं, किंतु डेनिश साहित्य में उनकी रचनाओं को प्रवासी साहित्य नहीं माना गया। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी के सलमान रुशदी, वी एस नायपाल, झुंपा लाहिड़ी, एम.जी. वासनजी, गौतम मलकानी, बालाचंद्रा राजन आदि कई भारतीय लेखक ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में बसे हुए हैं। भारतीय मूल के इन सभी लेखकों ने अंग्रेज़ी में प्रचुर मात्रा में अपना लेखन–कार्य किया और उनके साहित्य को अंग्रेज़ी साहित्य में उचित स्थान भी मिला है। हिन्दी साहित्य में यह विडंबना है कि प्रवासी हिन्दी साहित्य को अलग विधा के रूप में माना जा रहा है, हालांकि प्रवासी लेखक अपने–आपको साहित्यकार ही कहलाना चाहते हैं न कि प्रवासी साहित्यकार। प्रवासी साहित्यकार नाम को वे तुच्छ या हीन मानते हैं।"[1]

हिंदी साहत्य में प्रवासी साहित्य एक अलग विमर्श के रूप में उभरा है। इसका कारण यह भी है कि इनके साहित्य का परिवेश भारत में रह रहे लेखकों से भिन्न है। प्रवासी लेखकों ने प्रवास के दौरान आई समस्याओं और अपने संघर्षों को अपने साहित्य में स्था दिया है। कृष्ण बिहारी कहते हैं, ''मेरा लेखन अन्य रचनाकारों से इसलिए अलग है कि मैंने अरब दुनिया को हिन्दी कहानियों में दिखाया है।''[2]

प्रवासी लेखक किसे कहा जा सकता है, इस पर विचार करते हुए प्रवासी लेखक तेजेंद्र शर्मा अपने आलेख "प्रवासी हिंदी साहित्य की चुनौतियाँ" में कहते हैं – "प्रवासी साहित्य पहली पीढ़ी के प्रवासियों द्वारा रचा गया साहित्य ही हो सकता है। जो पीढ़ी प्रवास की पीड़ा सहती है, अपनी जड़ों से उखड़ने के दर्द महसूस करती है, नई ज़मीन पर अपने आपको जमाने की मेहनत करती है, अपनी जन्मभूमि के प्रति नॉस्टेलजिया महसूस करती है, और अंततः अपने अपनाए हुये देश की स्थितियों पर अपना साहित्य रचती है, उसी पीढ़ी को प्रवासी साहित्यकार कहलाने का हक़ रखती है।"[3]

तेजेंद्र शर्मा के इस विचार से स्पष्ट है कि प्रवासी अपने मूल देश अर्थात भारत को भी याद करते हैं और अपने वर्तमान देश के हालातों को भी अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं। हर देश के रीति–रिवाज अलग होते हैं, इसलिए प्रवासी लेखकों का सामना विभिन्न प्रकार के समाज और संस्कृति से हुआ। भारत और पश्चिम के देश सांकृतिक रूप से पर्याप्त भिन्नता रखते हैं। पश्चिमी समाज में लड़के–लड़कियों के मिलने पर कोई पाबंदी नहीं है और विवाह के लिए वे पूर्ण स्वतन्त्र हैं। यहाँ के कानून ने अविवाहित माँ को सामाजिक मान्यता दी है। पश्चिमी समाज में रस्मी समागमों पर चुंबन का रिवाज है और रस्मी समागमों में स्त्री–पुरुषों की ओर से शिष्टाचार के तौर पर हाथ मिलाया जाता है। बुजुर्गों, रिश्तेदारों और माता–पिता को नाम लेकर बुलाने का आम व्यवहार है। होमिऊसैक्सुअल का नग्न नाच भी पश्चिमी समाज में देखा जा सकता है।

अगर भारतीय संस्कृति की बात करें तो यह चार पुरुषार्थों दृ धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष पर आधारित है। काम को भारतीय संस्कृति का न सिर्फ अंग माना गया है, अपितु हमने कामदेव नामक देव की कल्पना की है। काम को कला मानते हुए मंदिरों में कामकलाओं की मूर्तियाँ स्थापित की हैं, लेकिन भारत में काम का वैसा रूप कभी नहीं रहा, जैसा की पश्चिमी देशों में है। भारत में काम जीवन के लिए है, जीवन काम के लिए नहीं। हमारे आदि देव ब्रह्म, बिष्णु, महेश तक गृहस्थ हैं और इस प्रकार काम को सहज रूप से स्वीकार किया गया है। विवाह भारत में एक सामाजिक दायित्व है और विवाह बंधन को पवित्र मानते हुए इसे सात जन्मों तक निभाने की बात की जाती है, जबकि पश्चिम में विवाह ऐसा मजाक है, जिसे जब चाहा तोड़ा जा सकता है। पूर्वी समाज में लड़के–लड़कियाँ मिलने–जुलने और विवाह के निर्णय को लेकर एक मर्यादा में बँधे होते हैं। यहाँ अविवाहित माँ का संकल्प अमान्य है। यहाँ खुलेआम चुंबन की सख्त मनाही है। यहाँ रस्मी समागमों पर स्त्री–पुरुष का हाथ मिलाना अशोभनीय माना जाता है। यहाँ हाथ का स्पर्श नहीं बल्कि दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया जाता है। बुजुर्गों, रिश्तेदारों और माता–पिता को नाम से बुलाने पर अशिष्टता का एहसास होता है। पूर्वी समाज में होमिऊसैक्सुअल न होने के समान है। अर्थ जीवन के लिए उपयोगी है, इसलिए इसके महत्त्व को भी स्थान दिया गया है

और काम–अर्थ को अपनाते हुए, धर्म को निभाते हुए मोक्ष को जीवन का अंतिम उद्देश्य बताया गया। प्रवास को गए लोग अपने साथ भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन मूल्यों को लेकर गए हैं और उन्हें अपने अप्रवासी देशों में इससे अलग प्रकार का वातावरण मिला। उधर पैदा हुई उनकी संताने भारतीय संस्कृति की बजाए वर्तमान देश की संस्कृति के नजदीक हैं। इससे प्रवासी लेखक एक अलग प्रकार की पीड़ा को भुगत रहे हैं। पंजाबी उपन्यासकार स्वर्ण चन्दन का उपन्यास 'कंजका' इस पीड़ा को बड़ी शिद्दत से ब्यान करता है। रचना के विषय पर तात्कालीन परिस्थियाँ प्रभाव डालती हैं। इस संबंध में विजय शर्मा कहती हैं, ''कहानीकार शून्य में रचना नहीं रचता, वह किसी समाज का अंग होता है, उसी समाज से वह अपने पात्र उठाता है,वहीं से उसे संस्कृति, मूल्य, रीति–रिवाज़ प्राप्त होते हैं। उसके अनुभव और अनुभूति का उत्स उसका समाज होता है।''[4]

अर्चना पैन्यूली का जन्म भारत के देहरादून में 1963 में हुआ और वे 1997 में डेनमार्क जाकर बस गईं। उनकी कहानियों का अध्ययन करते हुए यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि इन कहानियों में भारतीय संस्कृति का चित्रण मिलता है, इनमें दो संस्कृतियों का द्वंद्व भी है और अनेक जगहों पर ऊहापोह की स्थिति भी है। लेखिका ने पाश्चात्य संस्कृति की सिर्फ आलोचना का काम नहीं किया, अपितु उनके उन मूल्यों को भी दिखाया है, जो किसी भी मानव समाज के लिए गर्व का विषय हो सकते हैं। भारतीय परम्परित सामाजिक मूल्यों में संतान के नाम के साथ पिता का नाम जोड़ा जाता है। परन्तु 'केतलीना' कहानी में पुर्तगाल के परम्परित सामाजिक मूल्य देखे जा सकते हैं, जो भारतीय परम्परित सामाजिक मूल्यों से भिन्न हैं। केतलीना बताती है–

''पुर्तगाली सामाजिक संरचना के अनुसार संतान माता–पिता दोनों का ही सरनेम वंशानुक्रम में प्राप्त कराती है, जिसमें माता का सरनेम पिता के सरनेम से पहले लगता है।''[5]

भारत में अपने पिता की खोज करने आई केतलीना के नाम के साथ उसकी पुर्तगाली माँ का सरनेम भी लगता है। यहाँ परम्परित सामाजिक मूल्यों में स्त्री पुरुष को समानता के अधिकार दिए गए हैं। परन्तु इस तरह की समानता हर देश और समाज में नहीं है, लेकिन भिन्नताओं के बावजूद बहुत कुछ समान भी है। अर्चना पेन्यूली कहानी श्मही क्या कहेगी?श में विभिन्न संस्कृतियों की चार माताओं का वर्णन है। मयूरा भारत से डेनमार्क गई है। वहाँ उसकी दोस्ती डेनमार्क की सोफिया, इटली की नतालिया और अमेरिका की कोलीन से हो जाती हैं। यह कहानी दर्शाती है कि माँ किसी भी जाति, धर्म और संस्कृति से जुड़ी हो, अपनी संतान के लिए वह माँ ही होती है। माँ बनकर हर औरत गर्व महसूस करती है –

"हम सभी शिक्षित व पेशेवर महिलाएँ थीं। हम सभी के अपने–अपने करियर थे, मगर इस समय हम सिर्फ़ नई माताएँ थीं, जिनका ध्येय फ़िलहाल अपने नवजात शिशुओं का पालन–पोषण था। सच कहूँ तो माँ बनने का हमें थोड़ा गुमान भी था।"[6]

सेरोगेट मदर की अवधारणा जिस रूप में पश्चिम में है, उसे वर्तमान भारत में तो देखा जाता है ही, उसका कोई–न–कोई रूप प्राचीन भारत में अवश्य रहा होगा। कौरवों के अलग प्रकार के गर्भ से उत्पन्न होना इसका एक उदाहरण है। प्रवासी लेखकों ने इसके पाश्चात्य रूप का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। अर्चना पैन्यूली की कहानी ''आई एम प्राउड ऑफ यू, माँ'' में आरव का जन्म सेरोगेसी के द्वारा होता है और उसकी सेरोगेट माँ उसकी चाची मानसी है। "मैं कुमाता नहीं" की नोरा भी सेरोगेसी से माँ बनती है।

सौतेली माँ का जो चित्रण भारतीय साहित्य में मिलता है, उसका वर्णन अर्चना पैन्यूली की कहानियों में नहीं और इसका कारण विदेशी प्रभाव ही है, जिसमें सौतेली माँ का होना आम है। 'बेघर' का राहुल अपनी सौतेली माँ से परेशान ज़रूर है, लेकिन सौतेली माँ का कोई विशेष दुर्व्यवहार नहीं दिखाया गया है। कहानी "कितनी माँएँ हैं मेरी....." के नीलाभ को उसके दादा–दादी ने पाला है, क्योंकि उसके पिता ने उसकी पाकिस्तानी माता को तलाक दे दिया था। पिता ने इंग्लैंड में दूसरी शादी कर ली। बड़ा होकर वह भी उनके पास आ गया है। सौतेली माँ से उसे कोई परेशानी नहीं होती। दरअसल यह कहानी अनेक माँओं में से असली माँ किसे कहे, इस समस्या को लेकर है। पिता की मृत्यु से पाकिस्तान से फोन आता है कि उसकी वास्तविक माँ बीमार है। नीलाभ की पत्नी उसे पाकिस्तान जाने को तैयार करती है। उनके वहाँ पहुँचने के बाद माँ उसकी बाँहों में अंतिम साँस लेती है। पाकिस्तान से लौटते हुए वह भावुक हो जाता है और कहता है –

''कई बार मैं सोचता हूँ, कितनी माँएँ हैं मेरी! छोटा था तो दादी माँ को ही अपनी माँ समझता था। बड़ा हुआ तो सौतेली माँ जीवन में आई और अब अपनी माँ – पचास साल की उम्र में मिली।''[7]

भारतीय संस्कृति जीव–जन्तुओं सभी पर दया करने का संदेश देती है, मानव की भलाई की बात करती है। अर्चना पैन्यूली ने माँ को अपनी कहानियों का विषय बनाकर इसी मूल्य की स्थापना अपनी कहानियों में की है। लेखिका ने धरती को भी माँ माना है। कहानी ''तुम्हारी धरती माँ'' में धरती अपनी उत्पत्ति और विकास की कहानी सुनाती है। आदमी की करतूतों का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए सर्वे भवन्तु सुखिनः का संदेश देती है। लेखिका की कहानियों में मानवेत्तर माँओं का वर्णन हुआ है। कहानी ''फैनी'' एक कुतिया की ममता की कहानी है। वह अपने बच्चों के लिए अपना घर छोड़ देती है, लेकिन अंतिम साँस वह अपने घर में ही लेती हूं। कहानी ''कबूतरी, थारो कबूतर गूटर–गूटर–गू बोल्यो रे.. '' में कबूतरों के जोड़े का चित्रण किया है। हालाँकि दूसरी तरफ आरुष और पीहू भी हैं। पीहू माँ बनने वाली है और वह कबूतरों के मिलन से लेकर बच्चों को बड़ा करके पुनः मिलन तक के दृश्य को देखती है। इस बीच वह खुद भी माँ बन जाती है। वह पक्षियों के निस्वार्थ भाव से बच्चों के पालन करने पर विचार करती है।

भारतीय वर्तमान समाज को देखें तो साम–दाम–दंड–भेद से काम निकलवाना भारतियों का प्रमुख व्यवहार बन गया है। लेखिका ने इसे 'अनुजा' कहानी में दिखाया है कि विदेश में बसने के लिए भरिय किस प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं, जिससे भारत की छवि को भी ठेस पहुँचती है। लेखिका दोनों संस्कृतियों की तुलना करते हुए भारत में वर्तमान में छीजते मूल्यों पर प्रहार करती है। कहानी श्मही क्या कहेगी?श में दिल्ली में 16 दिसंबर को हुए बलात्कार का विश्व स्तर पर चर्चित होना दिखाया गया है और इसको लेकर भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति की तुलना भी हुई है –

''यहाँ लोग सेक्स के बारे में बात करते है, मगर सेक्स वायलेंस (यौन अपराध) नहीं होते।' सोफिया विशेषकर मेरी तरफ देखते हुए बोली। मैं उसका तात्पर्य ताड़ गई। भारत में भले ही सेक्स के बारे में बात करना सांस्कृतिक रूप से वर्जित है, मगर वहाँ यौन–हिंसा चरम सीमा पर है।''[8]

इसी कारण भारतीय लोग भारत लौटना नहीं चाहते। अगर लौटना पड़े तो वे अपने बच्चों का भविष्य प्रवासी देश में सुरक्षित महसूस करते हैं। कहानी 'कठिन चुनाव' में अनिता का परिवार डेनमार्क में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानता है। अनिता के दादा जी, पिता जी नहीं चाहते कि उनके बच्चे डेनिश संस्कृति को अपनाए और विजातीय, विधर्मी, विदेशी से शादी करें, लेकिन अनिता की बड़ी बहन नैना यहूदी संग भाग जाती है, जिसका प्रभाव अनिता पर पड़ता है। 17 वर्ष की आयु में ही

अनिता की शादी भारत आकर भारतीय युवक से कर दी जाती है। शादी के बावजूद वह अपने सहपाठी मोर्गन की गर्लफ्रैंड बनी रहती है। अपने पति अनिल को लेकर उसके दिल में कोई लगाव नहीं, लेकिन अनिल जब स्थायी रूप से डेनमार्क पहुँचता है तो वह मोर्गन और अनिल में से अनिल को चुनती है, हालाँकि उसका मन इसके लिए आक्रोशित भी होता है –

''अनिल के साथ एक सुखद व संतुष्ट ज़िंदगी बिताते हुए भी पता नहीं क्यों मन में यह आक्रोश फूट पड़ता है कि नैना ने भी अपनी पसंद का लाइफ पार्टनर चुना और श्यामल ने भी। पिसी तो मैं घुन की तरह।''[9]

यह कहानी स्पष्ट करती है कि नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति की अपेक्षा पाश्चात्य संस्कृति की तरफ़ झुकाव रखती है, जिससे प्रवासी परिवारों में तनाव का माहौल पैदा होता है।

प्राक्कथन

आलोचनात्मक विधि को अपनाते हुए अर्चना पैन्यूली की कहानियों में भारतीय संस्कृति के चित्रण का अध्ययन

निष्कर्ष

अर्चना पैन्यूली की कहानियों में भारतीय संस्कृति का चित्रण भी है और पाश्चत्य तथा भारतीय संस्कृति की तुलना भी है, टकराव भी है, सामंजस्य भी और प्रवास की समस्याएँ भी हैं। उनकी कहानियों का अध्ययन करते हुए प्रवासी कहानियों में भारतीय संस्कृति का चित्रण किस प्रकार मिलता है, यह पूर्णत स्पष्ट हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. https://www.garbhanal.com/the-challenges-of-overseas-hindi-literature-asmita
2. सुधा ओम ढींगरा, कृष्ण बिहारी से डॉ. सुधा ओम ढींगरा से बातचीत, गर्भनाल (पत्रिका), (अंक–2, जुलाई, 2009), पृष्ठ – 9
3. https://www.garbhanal.com/challenges-of-pravasi-hindi-literature
4. विजय शर्मा, 'नातूरः रिश्तों में अमानवीयता', गर्भनाल (ई पत्रिका), (अंक–9, वर्ष – 1, संस्करण–60, नवम्बर 2011) पृष्ठ 37. (www.garbhnal.com)
5. पैन्यूली, अर्चना, 'केतलीना', (दिल्लीः सहयात्रा प्रकाशन, प्रा. लि., 2005) पृष्ठ 19
6. पैन्यूली, अर्चना, 'हाईवे E 47' (दिल्लीः ज्ञान गंगा, 2018), पृ. – 59
7. पैन्यूली, अर्चना, 'कितनी माँएँ हैं मेरी.....'(नई दिल्लीः विद्या विकास एकेडमी, 2019), पृ. – 128
8. वही, पृ. – 64
9. वही, पृ. दृ 105–106